International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 7 No. 4 January – February - 2026

आदिवासी महिलाओ की स्थिति और समस्याओ का अध्ययन

सहा. प्राध्यापक त्रिवेणी व्ही. जाधव[1], सहा. प्राध्यापक स्वप्नाली पी. बिरनाळे[2]

[1,2]सहाय्यक प्राध्यापक, डॉ. डी.वाय. पाटील कला, वाणिज्य आणि विज्ञान महाविद्यालय, आकुर्डी, पुणे-४४

Corresponding Author – सहा. प्राध्यापक त्रिवेणी व्ही. जाधव

DOI - 10.5281/zenodo.18887439

शोध संक्षेप:

आदिवासी का निवास स्थान, पहाड़ियों या जंगलों में निवास, श्रमिक वर्ग इत्यादि। आदिवासियों को भारत के संविधान में अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया गया है। वर्तमान में जनजातियों की पुरानी पहचान बदल रही है। आदिवासी मूल प्रकृति पूजक थे। स्वतंत्रता के बाद, देश के अनुसूचित जनजातियों के हितों की रक्षा के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कई कदम उठाए गए हैं और विभिन्न अवधियों के दौरान आदिवासी विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है।आदिवासी महिलाओं मे आदिवासी अर्थव्यवस्था और राजनीतिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण नेतृत्व के पदों की कमी है, भले ही उन्होंने आदिवासी आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई हो।सामाजिक स्तरीकरण ने भी आदिवासी समाज को प्रभावित किया है क्योंकि देश भर में संरचनात्मक और सांस्कृतिक परिवर्तन के कारण आदिवासी लोगों को तेजी से परिवर्तन की दिशा मे जोड़कर समायोजन के अधीन किया गया है। आदिवासी महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं की पहचान करने के लिए, हमें आदिवासी समाजों के सामाजिक-आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक ढांचे का अध्ययन करना अत्यंत जरूरी है। आदिवासी महिलाओ की विविध समस्याओ को यहा पर प्रस्तुत करने के प्रयास किया गया है|

शब्दबीज - आदिवासी महिलाओं, आदिवासी समाज, अनुसूचित जनजाति, सामाजिक-आर्थिक संरचना, समस्याएँ

प्रस्तावना:

आदिवासी उन मूल निवासियों या स्वदेशी समुदायों को कहा जाता है ,जो किसी क्षेत्र के सबसे पुराने निवासी होते हैं, खासकर भारतीय उपमहाद्वीप में, और जिनकी अपनी विशिष्ट संस्कृति, भाषा और परंपराएं होती हैं|इन्हें भारत में "अनुसूचित जनजाति " भी कहते हैं और ये "जल, जंगल, जमीन" से जुड़े होते हैं, जो भारत की विविधता और समृद्ध इतिहास का अहम हिस्सा हैं।

आदिवासी कौन हैं? अर्थ: 'आदिवासी' शब्द 'आदि' (शुरुआती) और 'वासी' (निवासी) से बना है, जिसका मतलब 'मूल निवासी' है|भारत के प्रमुख आदिवासी समुदायों में गोंड, हल्बा,मुण्डा, खड़िया, बोडो, कोल, भील, नायक, सहरिया, संथाल ,भूमिज, हो, उरांव, बिरहोर, पारधी, असुर, भिलाला,आदि|

आदिवासी महिलाएँ अपनी संस्कृति की वाहक, अर्थव्यवस्था की रीढ़ और सामाजिक परिवर्तन की शक्ति हैं, जो पितृसत्ता, अशिक्षा, भेदभाव और भूमि अधिकारों जैसे मुद्दों से जूझते हुए भी शिक्षा, राजनीति और सामुदायिक जीवन में सशक्त हो रही हैं, हालांकि उन्हें दोहरी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और वे समानता के लिए लगातार संघर्ष कर रही हैं।लेकिन स्वतंत्रता के बाद पंचायती राज और सत्ता के विकेंद्रीकरण के बाद, उन्हें लोकतंत्र में राजनीतिक

शक्ति प्राप्त करने का अवसर मिला। पिछले दो दशकों में, आदिवासी राजनीतिक क्षेत्र में अधिक सक्रिय हो गए हैं। सभ्यता की प्रक्रिया ने उन्हें सांस्कृतिक रूप से प्रभावित किया है, और विस्थापन के अन्य तरीकों ने उन्हें समाज का एक मील का पत्थर बना दिया है। स्वतंत्रता के बाद, देश के अनुसूचित जनजातियों के हितों की रक्षा के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कई कदम उठाए गए हैं और विभिन्न अवधियों के दौरान आदिवासी विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है। शिक्षा और जागरूकता की कमी -शिक्षा साक्षरता का स्तर समाज के विकास के महत्वपूर्ण संकेतक है | किसी के वर्ग जाती ,लिंग, जातीयता या धर्मिक पहचान के बावजूद आज की दुनिया में शिक्षा महत्वपूर्ण है |शिक्षा पुरुषो और महिलाओ के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है |औपचारिक शिक्षा तक पहुंच आदिवासी महिलाओ के सामने आनेवाली प्रमुख समस्यायो में से एक है |

शोध प्राविधि:

शोध पत्र का विषय आदिवासी समाज की महिलाओ की समस्याएं है |प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीय शोध सामग्री का प्रयोग किया गया है |एवं वर्णनात्मक शोध प्राविधि का प्रयोग किया गया है |

उदेश्य:

1. आदिवासी महिलाओ के सामाजिक जीवन शैली एवं संस्कृति का अध्ययन करना |
2. आदिवासी महिलाओ की प्रमुख समस्याओ का अध्ययन करना |
3. आदिवासी महिलाओ की वर्तमान समस्याओ का अध्ययन करना |

आदिवासी महिलाओं की समस्याएं :

1. आदिवासी महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं की पहचान करने के लिए, हमें आदिवासी समाजों के सामाजिक-आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक ढांचे का अध्ययन करना अत्यंत जरूरी है।
2. शिक्षा की कमी: शिक्षा के अवसरों की कमी उन्हें अपने अधिकारों और बेहतर जीवन से वंचित करती है।
3. स्वास्थ्य और पोषण: कुपोषण, एनीमिया, और पारंपरिक प्रसव पद्धतियों के कारण उच्च मातृ एवं शिशु मृत्यु दर, जैसा कि के.बी. नायक और मिनल कुलकर्णी के कार्यों में बताया गया है।
4. आर्थिक शोषण: वन उत्पादों पर निर्भरता, कम मजदूरी, और महाजनों द्वारा शोषण।
5. सामाजिक भेदभाव: डायन प्रथा, पर्दा प्रथा और गैर-आदिवासी समाज द्वारा वस्तु के रूप में देखा जाना।
6. राजनीतिक प्रतिनिधित्व: पंचायत और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में पुरुषों का प्रभुत्व, जिससे महिलाएँ पीछे रह जाती हैं।
7. हिंसा और शोषण: शारीरिक और यौन हिंसा की उच्च दर, खासकर शहरी क्षेत्रों में, जैसा कि एक अध्ययन में बताया गया है।

राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की समस्याएं :

आदिवासियों का राजनीतिक और सामाजिक जीवन अविभाज्य है। इसलिए, अनिवार्य सवाल यह है, कि आदिवासी राजनीतिक संस्थानों में महिलाओं की क्या स्थिति है? भारत में आदिवासी समुदाय मुख्य रूप से कबीले और जनजाति के होते हैं। समुदाय का प्रत्येक मुखिया आम तौर पर एक ऐसा पुरुष होता है जिसे आमतौर पर समूह के

प्रमुख के रूप में सम्मानित, आज्ञाकारी और स्वीकार किया जाता है। यह वंशानुगत है और अंतिम अधिकार हम में निहित है। आदिवासियों का पारंपरिक राजनीतिक क्षेत्र बड़ों की परिषद, ग्राम प्रधान, ग्राम पंचायत और आदिवासी प्रमुखों जैसे संस्थानों के भीतर ही सीमित है। इन सभी में, सबसे अधिक बार वह पुरुष होता है जो सभी मामलों में महत्वपूर्ण निर्णय लेता है। खासी-जयंतियों के मातृसत्तात्मक समाज के बीच भी, समाज ने महिलाओं को राजनीतिक मामलों में भाग लेने के पक्ष में नहीं किया। पारंपरिक खासी-जयंतिया राजनीतिक प्रणाली में, महिलाओं को किसी भी दरबार (परिषद की बैठक) में शामिल होने की अनुमति नहीं थी, न ही उन्हें किसी भी सार्वजनिक बैठक में बोलने की अनुमति नहीं थी। इस प्रकार, आदिवासी महिलाओं ने पारंपरिक राजनीतिक संरचना में कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं रखा और उनकी शक्ति नगण्य थी। इसलिए, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि भले ही महिलाओं ने आदिवासी अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हो, लेकिन धार्मिक और राजनीतिक क्षेत्र में उनकी स्थिति तुलनात्मक रूप से कम रही, जो उनके लिए बहुत बड़ी समस्या थी। राजनीति में महिलाओं की स्थिति हमेशा सीमांत रही है। भारत के संविधान द्वारा महिलाओं को राजनीतिक समानता प्रदान की जाती है, लेकिन भारतीय राजनीति में उनकी भागीदारी नगण्य है।

अर्थव्यवस्था से जुड़ी समस्याएं:

आदिवासी महिलाएं आदिवासी अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, लेकिन यह कहना मुश्किल है, कि उनकी स्थिति पुरुषों के बराबर है। लालरिंदिकीराल्टे ने कहा, चूंकि इन आर्थिक गतिविधियों में महिलाएँ शामिल होती हैं, और चूंकि इसमें शामिल राशि बड़ी नहीं होती है, इसलिए उन्हें काम के तौर पर माना जाता है भले ही वे आदिवासी अर्थव्यवस्था में पुरुषों के साथ समान रूप से भाग लेते हैं पारंपरिक आदिवासी अर्थव्यवस्था में, महिलाओं ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेकिन बड़े पैमाने पर व्यावसायीकरण और औद्योगीकरण के कारण, उनकी आर्थिक भूमिका बहुत कम हो गई है। आरक्षित क्षेत्रों में वनों की उन्नत प्रौद्योगिकी और संरक्षण से कृषि कार्यों में महिलाओं की भागीदारी भी बहुत प्रभावित हुई है।आदिवासी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर वृक्षों की कटाई और वनों की कटाई से आदिवासी महिलाओं पर गंभीर तनाव और तनाव पैदा हो गया है। महिलाओं की समस्याएं काफी हद तक आदिवासी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर भूमि अलगाव से संबंधित हैं। असमान वेतन संरचना भी आदिवासी महिलाओ की समस्या रही है। कृषि के क्षेत्र में महिलाओं के योगदान के अलावा, खानों, खनिज संग्रह और अन्य औद्योगिक कार्यों में उनका योगदान पुरुषों की तुलना में कम महत्वपूर्ण नहीं है। लेकिन आदिवासी महिला श्रम को दी जाने वाली मजदूरी की सटीक जानकारी राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध नहीं है। पुरुष और महिला मजदूरों के बीच यह अंतर मजदूरी संरचना पूरे देश में प्रचलित है और महिलाओं के मजदूरी शोषण को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। डॉ। लालरिंदिकी दृढ़ता से कहती है, कि महिलाओं का वेतन पुरुषों की मजदूरी से कम होने के कारण जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं को कम दर्जा दिया गया है।इसके अलावा शारीरिक शोषण आदिवासी महिलाओ की समस्या रही है।

दक्षिण छोटा नागपुर डिवीजन के 'रेजस' के रूप में जानी जाने वाली आदिवासी महिला मजदूरों पर अपने शोध के क्रम में सुशमासहाय प्रसाद ने पाया कि आदिवासी महिलाओं को बहुत ही तुच्छ धन के लिए लंबे समय तक काम करने के लिए बनाया गया था और कई समय, यह छोटी राशि अधिकारियों या बिचौलियों द्वारा सुरक्षा के

बहाने वापस ले ली जाती थी या बाद में पूर्ण रूप से अदा की जाती थी।

सामाजिक संरचना से संबंधित समस्याएं:

अधिकांश भारतीय जनजातियाँ पितृसत्तात्मक हैं। ऐसे पितृसत्तात्मक समाज में, सदस्य पुरुष के माध्यम से अपने वंश का पता लगाते हैं, आम तौर पर मूल पुरुष पूर्वज के लिए। संपत्ति भी पुरुष लाइन में विरासत में मिली है और यह हमेशा एक बेटा होता है जो अपने पिता को एक कबीले या वंश के प्रमुख के रूप में सफल बनाता है। अधिकार भी पुरुष के हाथों में निहित होता है। यह पितृसत्तात्मक समाजों के बहुमत के लिए सच है। आदिवासी महिलाओं केवल मामूली और महत्वहीन चीजें विरासत में दी जाती हैं। यह संभवतया प्रमुख संपत्तियों के नियंत्रण और प्रबंधन से पर्दा उठाने के लिए किया जाता है। यह पाया जाता है कि मातृसत्तात्मक समाजों में, हालांकि घरेलू संपत्ति माँ से बेटी को विरासत में मिली है, वास्तविक प्रबंधन पुरुष के हाथों में है। खिसियों के बीच, डायनगुनमोनरिंजह दावा करता है कि, संपत्ति का वास्तविक प्रबंधन भाइयों और चाचाओं के हाथों में निहित है, और पिता से परामर्श किया जाना है। एक बेटी अंकल और भाइयों की जानकारी और सहमति के बिना पारिवारिक संपत्ति नहीं बेच सकती है। इस प्रकार, मातृसत्तात्मक सामाजिक संरचनाएं जो आदिवासी महिलाओं के पक्ष में प्रतीत होती हैं, इतनी अनुकूल नहीं हैं जितनी कि यह प्रतीत होती हैं। सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्र में आदिवासी महिलाओं के साथ अपेक्षाकृत अच्छा व्यवहार किया जाता है, लेकिन उनकी कानूनी स्थिति काफी कम है और इससे समुदाय की महिलाओं के लिए कई समस्याएं पैदा होती हैं।

असमान समान मजदूरी की समस्या:

कृषि के अलावा महिलाये अन्य कार्यबल खदानों खनिज क्षेत्र में योगदान करती है अंतर् वेतन सरचना प्रचलित है जो इससे मिली समस्या आदिवासी महिलाओ को आर्थिक नुकसान में डालती है |पुरुष और महिला मजदुरो को भुगतान की जाने वाली मजदूरी में यह अंतर् देशभर में प्रचलित है |निर्माण से जुड़े कार्य एवं तेंदूपत्ता संग्रहण के मामले में सस्ते महिला श्रम का शोषण देखा जा सकता है | इन उदाहरणों से एक कटु सत्य का पता चलता है जिसमे की औद्योगीक ताकतो तहत महिलाओ का शोषण हो रहा है |न्यूनतम मजदूरी का पालन नहीं होता |लिखित अनुबंध नहीं होते| सामाजिक सुरक्षा (पीएफ, बीमा, मातृत्व लाभ) नहीं मिलती| शिक्षा और जागरूकता की कमी ,शिक्षा के अभाव में वे अपने कानूनी अधिकारों (जैसे समान मजदूरी अधिनियम) से अनजान रहती हैं, जिससे शोषण आसान हो

निष्कर्ष:

इस प्रकार, हम यह कहकर निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि आदिवासी महिलाओं को हर एक क्षेत्र मे बहुधा समस्याओ का सामना करना पड़ता है यह समाज के पुरुषों की तुलना में महिलाओं की निम्न स्थिति को दर्शाता है। जीवन के हर क्षेत्र में उन पर अत्याचार और भेदभाव किया जाता है। हलाकी संविधान में भी स्त्री-पुरुष को समानता की बात की गई है पर जब हकीकत कुछ और ही है। आदिवासी महिलाए को सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनैतिक समस्याओ का विशेष रूप से सामना करना पड़ता है। इस स्थिति को सुधारने के प्रयाश आदिवासी महिलाओ के विकास के लिए एक प्रशंशात्मक कदम माना जाएगा और साथ ही महिला सशक्तिकरण का भी एक उत्तम उदाहरण माना जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ:

1. जयंती आलम (Alam, Jayanti): 'Urban Migration among Tribal Women'।
2. गोमाती बोडरा (Bodra, Gomati): 'Empowerment of Tribal Women' (2008)।
3. एल. वी. (Lalchawiliana Varte): 'The Problems of Tribal Women in India'।
4. डॉ. प्रसंत कपांडा (Dr. Prasanata Kandapan): 'Empowerment of Tribal Women: Issues And Challenges' (2020)।
5. पैट्रिसिया एल. (Patricia L.) और अन्य शोधकर्ता: विभिन्न जर्नल लेख।
6. बी. डी. शर्मा -आदिवासी भारतप्रकाशक : साहित्य भवन(आदिवासियों के अधिकार, शोषण और महिलाओं की भूमिका)
7. डॉ. मीरा टंडन -आदिवासी महिलाएँ : स्थिति और संघर्ष (महिला, श्रम, स्वास्थ्य और सामाजिक भेदभाव पर केंद्रित)
8. एन. के. बेहरा -भारत में आदिवासी समस्याएँ, प्रकाशक : कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स
9. कुरुक्षेत्र पत्रिका (हिंदी) विषय : ग्रामीण व आदिवासी महिलाएँ